नईदुनिया





# यामाहा का नया इलेक्ट्रिक स्कूटर जेंटर ई लान्च

नई दिल्ली

अपने नए इलेक्ट्रिक स्कूटर, जेंटर ई को यामाहा कंपनी ने लान्च कर दिया है। इसके साथ ही यामाहा ने पेट्रोल इंजन वाले जेंटर ई का कान्सेप्ट भी शोकेस किया है। दोनों स्कूटर का उत्पादन वियतनाम में किया जाएगा। यह विशेष रूप से यूरोपीय बाजार को ध्यान में रखकर बनाया गया एक बड़े-पहियों वाला इलेक्ट्रिक स्कूटर है, जिसे कंपनी 2027 के वसंत ऋतु में यूरोप में लान्च करने की तैयारी कर रही है। यामाहा जेंटर ई का डिजाइन सरल और व्यावहारिक है, जिसमें विशिष्ट फ्रंट एप्रन और हेक्सागोनल हेडलैंप शामिल हैं। इसकी सबसे बड़ी खासियत इसके 16-इंच के अलाय व्हील्स हैं, जो यूरोपीय सड़कों की चुनौतियों, जैसे खराब सड़कें और गड्ढे, पर बेहतर राइडिंग अनुभव प्रदान करने में मदद करते हैं। जेंटर ई को प्लैटिनम सिल्वर और मिडनाइट ब्लैक कलर आप्शन में पेश किया जाएगा, और कंपनी इसके लिए कई एक्सेसरीज भी उपलब्ध कराएगी। जेंटर ई में 3.5 केडब्ल्यूएच का फिक्स्ड लिथियम-आयन बैटरी पैक दिया गया है।

कंपनी के अनुसार, यह एक बार फुल चार्ज होने पर लगभग 108 किलोमीटर की रेंज दे सकता है। इसका परफार्मेंस 125सीसी पेट्रोल स्कूटर के बराबर बताया गया है। इसमें नया ईएक्सले इलेक्ट्रिक ड्राइव सिस्टम इस्तेमाल किया गया है, जिसमें एयर-कूल्ड परमानेंट मैग्नेट मोटर, कंट्रोलर और रिडक्शन गियर को एक यूनिट में जोड़ा गया है। यह मोटर 10बीएचपी की पावर और 33.35 एनएम का टार्क जेनरेट करती है, और रियर व्हील तक पावर बेल्ट ड्राइव के जरिए पहुंचती है। बैटरी को एल-शेप में लगाया गया है, जिससे स्कूटर में फ्लैट फ्लोरबोर्ड और सीट के नीचे सामान रखने की पर्याप्त जगह मिलती है। बैटरी को सुरक्षा देने के लिए खास हाउसिंग दी गई है और इसे IP67 रेटिंग मिली है। इसमें 800वाट का आनबोर्ड चार्जर मिलता है, जिससे बैटरी को पूरी तरह चार्ज होने में लगभग 5.5 घंटे लगते हैं। इसके अलावा, 2027 में यू चार्ज सब्सक्रिप्शन सर्विस भी शुरू की जाएगी, जिसके जरिए ग्राहक सार्वजनिक चार्जिंग नेटवर्क का उपयोग कर सकेंगे। फीचर्स और हार्डवेयर की बात करें तो, जेंटर ई में नया अंडरबोन फ्रेम और 790 एमएम की सीट ऊंचाई दी गई है। सस्पेंशन के लिए आगे टेलिस्कोपिक फोर्क्स और पीछे ड्यूल शाक एब्जार्बर मिलते हैं। स्कूटर में 5-इंच का टीएफटी डिस्प्ले शामिल है, जो बैटरी और सर्विस स्टेटस, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और पार्किंग लोकेशन जैसी महत्वपूर्ण जानकारी दिखाता है, साथ ही यूएसबी टाइप-सी पोर्ट और स्मार्ट-की इग्निशन भी इसमें मौजूद हैं। फिलहाल, यामाहा ने एक्स जेंटर ई को भारत में लान्च करने की कोई जानकारी नहीं दी है। ब्रेकिंग के लिए आगे और पीछे 245 एमएम डिस्क ब्रेक दिए गए हैं, जिनके साथ एबीएस भी मिलता है। राइडर को एस (स्पोर्टी), टी (रोजाना इस्तेमाल), और ई (अधिक रेंज) तीन राइडिंग मोड मिलेंगे, साथ ही रीजेनरेटिव ब्रेकिंग भी दी गई है।

## न्यूज ब्रीफ

### बढ़ती लागत का बोझ ग्राहकों पर, रेस्टोरेंट के मेन्यू में उछाल, दूध, घी, सब्जियां और ईंधन हुए महंगे, कारोबारियों ने ग्राहकों पर डाला बोझ



नई दिल्ली। अगर आप अक्सर बाहर रेस्टोरेंट में खाने के शौकीन हैं तो यह खबर आपकी जेब पर भारी पड़ सकती है। देशभर के होटलों और रेस्टोरेंट में खाने-पीने की कई चीजों के दाम में 5 से 10 फीसदी तक की बढ़ोतरी कर दी गई है। दूध, घी, मक्खन, सब्जियां, ईंधन और कर्मचारियों पर होने वाला खर्च बढ़ने के कारण कारोबारियों ने मेन्यू की कीमतें बढ़ाने का फैसला किया है। अब आपको अपने पसंदीदा व्यंजनों और पेय पदार्थों के लिए पहले से अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी। रेस्टोरेंट संचालकों के मुताबिक, पिछले 6 से 8 महीनों में खाद्य सामग्री और अन्य जरूरी चीजों की लागत में लगभग 15 से 20 फीसदी तक का इजाफा हुआ है। खास तौर पर, पिछले ढाई महीनों में घी और मक्खन की कीमत लगभग 150 रुपये प्रति किलो बढ़ी है, जो करीब 25-30 फीसदी की वृद्धि है। इसका सीधा असर दक्षिण भारतीय व्यंजनों जैसे डोसा, पेय पदार्थों और चावल से बने आइटमों की कीमतों पर पड़ा है। सिर्फ डेयरी उत्पाद ही नहीं, बल्कि चावल, दाल, चीनी, खाद्य तेल और सब्जियों के दाम भी 5-7 फीसदी तक बढ़े हैं, जिसने कुल लागत में और इजाफा किया है। एक हास्पिटैलिटी उद्यमी ने बताया कि खाद्य सामग्री से लेकर ईंधन और गैस तक की कीमतें बढ़ने से कारोबारियों के लिए पुरानी दरों पर खाना बेचना अब मुश्किल हो गया है। इसी कारण, बढ़े हुए खर्च का कुछ हिस्सा ग्राहकों से वसूला जा रहा है।

### रेनाल्ट काइगर ने सुरक्षा में किया बड़ा सुधार



नई दिल्ली। ग्लोबल एनसीएपी क्रैश टेस्ट में शानदार प्रदर्शन करते हुए रेनाल्ट काइगर ने 5 में से 4-स्टार सेफ्टी रेटिंग हासिल की है। इस मेड-इन-इंडिया सब-काम्पैक्ट एसयूवी को पहले सिर्फ 2-स्टार रेटिंग मिली थी, लेकिन इस बार परीक्षण में 6 एयरबैग वाले वेरिएंट को शामिल किया गया था। यह क्रैश टेस्ट विशेष रूप से दक्षिण अफ्रीकी बाजार के लिए किया गया था। क्रैश टेस्ट के पहले चरण में, एसयूवी का 64 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पर फ्रंट आफसेट डिफार्मेबल बैरियर टेस्ट किया गया। टक्कर के दौरान कार के आगे के हिस्से ने प्रभाव को अच्छी तरह झेल लिया। ड्राइवर और सह-चालक एयरबैग समय पर खुले, जिससे केबिन सुरक्षित रहा। 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पर साइड मोबाइल बैरियर टेस्ट में, कार के दरवाजे और साइड बाडी पैनल को नुकसान पहुंचा, जबकि कर्टेन एयरबैग भी समय पर खुल गए और यात्री (डमी) सुरक्षित रहे। हालांकि, इस टेस्ट के दौरान कार का दरवाजा खुल गया, और रिपोर्ट में कार के फुटवेल एरिया और बाडीशेल को अनस्टेबल बताया गया है, जिसका अर्थ है कि बाडीशेल आगे के अधिक भार को सहने में पूरी तरह सक्षम नहीं पाया गया। ग्लोबल एनसीएपी के अनुसार, फ्रंट इम्पैक्ट टेस्ट में ड्राइवर और यात्री के सिर और गर्दन को अच्छी सुरक्षा मिली, जबकि सीने को मामूली सुरक्षा प्राप्त हुई।

### भारत एक ट्रिलियन डालर निर्यात लक्ष्य की ओर अग्रसर: गोयल, भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के बावजूद मजबूत प्रदर्शन

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने घोषणा की कि भू-राजनीतिक



अनिश्चितताओं और वैश्विक मंदी के बावजूद भारत चालू वित्त वर्ष में 1 लाख करोड़ डालर के महत्वाकांक्षी निर्यात लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में सही रास्ते पर है। उन्होंने देश के मजबूत व्यापार प्रदर्शन पर गहरा भरोसा व्यक्त किया। भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले (आईआईटीएफ) के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए गोयल ने बताया कि अक्टूबर माह में भारत ने लगभग 90 अरब डालर का अब तक का सबसे अधिक निर्यात दर्ज किया। इसमें लगभग 50 अरब डालर का वस्तु निर्यात और 40 अरब डालर का सेवा निर्यात शामिल है। मंत्री ने कहा कि चालू वित्त वर्ष के पहले सात महीनों (अप्रैल-अक्टूबर) में देश का कुल निर्यात 570 अरब डालर तक पहुंच गया है, जो एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। गोयल ने विश्वास व्यक्त किया कि दो युद्धों, वैश्विक अस्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की धीमी वृद्धि (3.5 फीसदी) के बावजूद, चालू वित्त वर्ष में भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार 15-16 फीसदी की प्रभावशाली दर से बढ़ेगा। उन्होंने नई दिल्ली के भारत मंडपम में 45वें भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले का उद्घाटन किया।

# अक्टूबर में खुदरा महंगाई बढ़ने से आरबीआई की चुनौती बढ़ी

**महंगाई ने आरबीआई की ऊपरी सीमा लांघी; होम और कार लोन की ईएमआई बढ़ने का डर**



नई दिल्ली

त्योहारों के मौसम में आम आदमी को महंगाई का बड़ा झटका लगा है। अक्टूबर महीने में देश की खुदरा महंगाई दर बढ़कर 6.09 फीसदी पर पहुंच गई है, जिसने भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा तय की गई 6 फीसदी की ऊपरी सीमा को भी पार कर लिया है। सितंबर के 5.54 फीसदी से यह एक महीने में ही काफी बढ़ गई है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव और बढ़ गया है। आंकड़ों के मुताबिक, इस महंगाई की मुख्य वजह खाने-पीने की चीजों के दाम हैं।

अक्टूबर में खाद्य महंगाई 8.94 फीसदी तक पहुंच गई, जबकि सितंबर में यह 7.74 फीसदी थी। प्याज, लहसुन और अदरक जैसी रोजमर्रा की जरूरतें महंगी होने से सीधा असर रसोई बजट पर पड़ा है। दरअसल, सरकार जब महंगाई का हिसाब लगाती है तो उसमें खाने-पीने की चीजों का हिस्सा करीब 40 फीसदी होता है। इसके साथ ही, आने-जाने का खर्च (ट्रांसपोर्ट महंगाई) भी सितंबर के 5.01 फीसदी से बढ़कर अक्टूबर में 5.84 फीसदी हो गया है, जिससे महंगाई का असर जीवन के हर क्षेत्र में महसूस किया जा रहा है। यह स्थिति भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के लिए एक बड़ी चुनौती है, जिसका काम महंगाई को 4 फीसदी (2 फीसदी ऊपर-नीचे) के दायरे में रखना है।

6.09 फीसदी की मौजूदा दर उसकी ऊपरी सीमा से बाहर है और पिछले पांच महीनों से महंगाई 4 फीसदी के लक्ष्य से ऊपर बनी हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे होम लोन और कार लोन की मासिक किस्त (ईएमआई) बढ़ने का डर है, क्योंकि दिसंबर में आरबीआई ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी कर सकता है। आरबीआई ने खुद अक्टूबर से दिसंबर के बीच महंगाई औसतन 6 फीसदी रहने का अनुमान लगाया है और पूरे वित्त वर्ष के लिए भी महंगाई का अनुमान 5 फीसदी से बढ़ाकर 5.2 फीसदी कर दिया है। कमजोर मानसून और अल नीनो के चलते भविष्य में खाद्य पदार्थों के दाम और बढ़ने की आशंका है, जो चिंता का विषय है। फिलहाल, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी (92 डालर प्रति बैरल) एक हल्की राहत देती है, लेकिन कुल मिलाकर अक्टूबर के आंकड़े बताते हैं कि आम आदमी का घर का बजट फिलहाल दबाव में है।

### नियामक फैसला पैरवी की विफलता नहीं, उपाध्यक्षों ने खंबाटा के आरोप खारिज किए

मुंबई। टाटा ट्रस्ट्स के उपाध्यक्षों वेणु श्रीनिवासन और विजय सिंह ने वरिष्ठ वकील डेरियस खंबाटा के उन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने टाटा संस की भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के साथ हुई बातचीत को अर्थहीन और असफल बताया था। टाटा ट्रस्ट्स के उपाध्यक्षों वेणु श्रीनिवासन और विजय सिंह ने एक संयुक्त पत्र जारी कर वरिष्ठ वकील डेरियस खंबाटा के आरोपों का खंडन किया है। खंबाटा ने हाल ही में टाटा ट्रस्ट्स के ट्रस्टी पद से इस्तीफा दे दिया था, और 17 सितंबर को टाटा समूह के लिए कलंक का दिन बताया था। उन्होंने टाटा संस की स्टाक एक्सचेंज लिस्टिंग पर आरबीआई के साथ हुई बातचीत की आलोचना की थी, जिसे उन्होंने न तो सार्थक और न ही सफल बताया। इसके जवाब में श्रीनिवासन और सिंह ने कहा कि रिकार्ड उनके विवरण का समर्थन नहीं करते। उन्होंने स्पष्ट किया कि आरबीआई के साथ बातचीत 2023 में शुरू हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप कर्ज का भुगतान हुआ और मार्च 2024 में डी-रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया गया। ट्रस्टियों को पूरी प्रक्रिया की जानकारी थी और किसी ने इसे उस समय अपर्याप्त नहीं कहा था। उन्होंने खंबाटा के सार्थक बातचीत के मायने पर भी सवाल उठाए, यह कहते हुए कि यदि इसका अर्थ नियमों को दरकिनार करना या विशेष लाभ हासिल करना है, तो यह टाटा माडल के अनुरूप नहीं होगा। संयुक्त पत्र में जोर दिया गया है कि आरबीआई भारत की वित्तीय प्रणाली के स्थायित्व के लिए जिम्मेदार है, और उसका फैसला पैरवी की विफलता नहीं होता है। गौरतलब है कि जहां श्रीनिवासन और सिंह दोनों ने टाटा संस को सूचीबद्ध करने का समर्थन किया है, वहीं टाटा ट्रस्ट्स ने जुलाई 2025 में कंपनी को निजी रखने का प्रस्ताव पारित किया था। यह मुद्दा समूह के भीतर गहरे मतभेदों को उजागर करता है।

# कई कंपनियां कर रही नई इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड गाड़ियां लाने की तैयारी



नई दिल्ली

भारत में कई कार निर्माता कंपनियां अब 7-सीटर एसयूवी सेगमेंट में नई इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड गाड़ियां लाने की तैयारी कर रही हैं। भारत में इस सेगमेंट की बढ़ी हुई मांग को देखते हुए टाटा, रेनाल्ट, टोयोटा और हुंडई सहित ब्रांड्स के आगामी माडल भविष्य की गतिशीलता को आकार देंगे। टाटा सफारी ईवी 2027 की शुरुआत में लान्च होने की उम्मीद है। यह हैरियर ईवी के एक्टी.ईवी प्लस प्लेटफार्म पर आधारित होगी, जिसमें 65 केडब्ल्यूएच और 75केडब्ल्यूएच बैटरी पैक के विकल्प मिलेंगे।

इसमें नए डिजाइन तत्व, पैनोरमिक सनरूफ और लेवल 2 एडीएएस जैसे फीचर्स शामिल होंगे। नई जनरेशन टोयोटा फार्च्यूनर का वैश्विक डेब्यू अगले महीने है और भारत में इसे अगले साल लान्च किए जाने की उम्मीद है। इसमें मौजूदा 2.8-लीटर टर्बो डीजल इंजन के साथ 48वी माइल्ड-हाइब्रिड सिस्टम मिल सकता है, जो बेहतर प्रदर्शन और ईंधन दक्षता प्रदान करेगा। इसमें स्प्लिट एलईडी हेडलाइट्स और एक नया केबिन होगा। रेनाल्ट की नई 7-सीटर एसयूवी अगले साल लान्च हो सकती है, जिसमें सात लोगों के बैठने की जगह होगी। इसका बाहरी डिजाइन रेनाल्ट बोरियल से प्रेरित हो सकता है। केबिन में दो डिजिटल डिस्प्ले, पैनोरमिक सनरूफ और लेवल 2 एडीएएस जैसे आधुनिक फीचर्स मिलने की उम्मीद है। इसमें टर्बो पेट्रोल और ई-टेक फुल-हाइब्रिड पावरट्रेन विकल्प हो सकते हैं। हुंडई एनआई1आई हाइब्रिड एसयूवी अल्काजार से ऊपर वाले सेगमेंट में लाई जा सकती है।

इसका मुकाबला टाटा सफारी और महिंद्रा एक्सयूवी 7एक्सO से होगा। इसमें पेट्रोल और इलेक्ट्रिक मोटर पर आधारित फुल-हाइब्रिड पावरट्रेन और ड्राइवर असिस्टेंस फीचर्स मिलेंगे। टोयोटा अर्बन क्रूजर हायराइडर 7 सीटर माडल की चर्चा एक बार फिर तेज हो गई है। यदि यह उत्पादन में आती है, तो इसमें मौजूदा 1.5-लीटर स्ट्रान्ग हाइब्रिड पेट्रोल इंजन और ई-सीवीटी गियरबाक्स दिया जा सकता है।

### एफएसएसएआई का दूध-डेयरी उत्पादों के लिए नया लोगो




नई दिल्ली। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने दूध और डेयरी उत्पादों की शुद्धता व पहचान सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अब जल्द ही आपको अपने पसंदीदा दूध, दही और पनीर जैसे उत्पादों के पैकेट पर एक खास नया लोगो दिखाई देगा, जो ग्राहकों को असली डेयरी उत्पाद पहचानने में मदद करेगा। एफएसएसएआई द्वारा तय किए गए इस नए समान लोगो में नीले रंग का एक चौकोर निशान होगा, जिसके अंदर सफेद रंग की बूंद का निशान बना होगा। देश की सभी डेयरी कंपनियों को अपने दूध और दूध से बने प्रोडक्ट्स के पैकेट पर एक जैसा ही यह निशान लगाना अनिवार्य होगा। यह नया लोगो ग्राहकों को बाजार में असली दूध और दूध से बने उत्पादों को नकली से अलग करने में सहायक होगा। जिस तरह खाने-पीने की चीजों पर शाकाहारी होने का संकेत हरा निशान और मांसाहारी होने का संकेत लाल निशान देता है, ठीक उसी तर्ज पर यह नीला चौकोर निशान दूध और डेयरी प्रोडक्ट्स की स्पष्ट पहचान कराएगा। एफएसएसएआई ने इस नए नियम को लागू करने की तारीख भी निर्धारित कर दी है।

# अक्टूबर में म्यूचुअल फंड एसआईपी को झटका: नए खातों से ज्यादा पुराने खाते हुए बंद

**एसआईपी के माध्यम से होने वाले कुल निवेश में भी कमी दर्ज आई**




नई दिल्ली

अक्टूबर में सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) म्यूचुअल फंड को बड़ा झटका लगा है, जब नए खुले खातों की तुलना में बंद हुए पुराने खातों की संख्या ज्यादा रही। इस अवधि में जहां 51 लाख नए एसआईपी खाते खोले गए, वहीं 59 लाख खाते बंद हुए।

यह पिछले 18 महीनों में नए खुले खातों का सबसे निचला स्तर और अप्रैल 2025 के बाद एक महीने में बंद हुए खातों की सबसे बड़ी संख्या है, जो निवेशकों के रुझान में एक अहम बदलाव को दर्शाता है। बड़ी संख्या में खातों के बंद होने के कारण कुल सक्रिय एसआईपी खातों की संख्या भी प्रभावित हुई। सितंबर में 10.89 करोड़ सक्रिय एसआईपी खाते थे, जो अक्टूबर के अंत तक घटकर 10.8 करोड़ रह गए। इसके साथ ही, एसआईपी के माध्यम से होने वाले कुल निवेश में भी कमी दर्ज की गई। अक्टूबर में सक्रिय खातों में कुल 32,160 करोड़ रुपये का निवेश आया, जबकि सितंबर में यह आंकड़ा 32,490 करोड़ रुपए था। यह गिरावट निवेशकों के आत्मविश्वास में कमी का संकेत दे सकती है। जानकारों के मुताबिक एसआईपी खातों में इस कमी की मुख्य वजह शेयर बाजार में आया उतार-चढ़ाव हो सकता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि निवेशक अभी भी देश की दीर्घकालिक वृद्धि में विश्वास रखते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले तीन महीनों से हर महीने 32,000 करोड़ से ज्यादा का योगदान देखा जा रहा है, जो निवेशकों के निरंतर विश्वास को दर्शाता है, भले ही कुछ खाते बंद हुए हों। अन्य जानकारों ने निवेशकों को चेताया है कि एसआईपी से निकलने का यह सही समय नहीं है। उन्होंने बताया कि बंद हुए खातों के आंकड़ों में ऐसे एसआईपी भी शामिल हैं जिनकी अवधि पूरी हो चुकी थी, केवल वे नहीं जिन्हें निवेशकों ने बीच में बंद किया।

बाजार के उतार-चढ़ाव के अलावा, एसआईपी बंद होने के पीछे त्योहारों पर हुए खर्चों और ईंधन की बढ़ी हुई कीमतों जैसे कारण भी हो सकते हैं, जिन्होंने घरों की नकदी पर दबाव डाला है। जानकारों ने कहा कि बाजार गिरने पर एसआईपी बंद करने से निवेशक रुपी कास्ट एवरेजिंग का लाभ नहीं उठा पाते हैं, और नवंबर में बाजार में आई तेज उछाल का लाभ लेने से भी वे चूक गए। यह स्थिति निवेशकों को अपने वित्तीय निर्णयों पर सावधानीपूर्वक विचार करने का अवसर प्रदान करती है।

# बैंकिंग सेक्टर में 70 प्रतिशत तक मैनुअल काम होंगे आटोमेट

नई दिल्ली

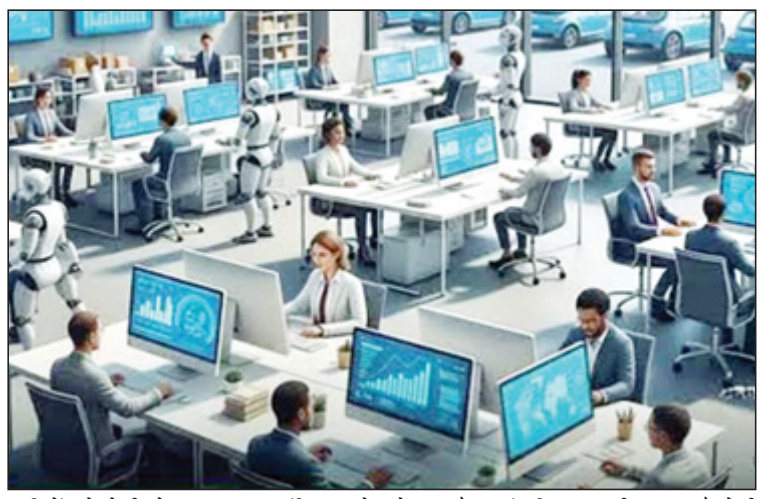
आईटी सेक्टर के बाद अब बैंकों में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के कारण काम करने का तरीका बदल सकता है। आने वाले समय में बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम प्रबंधन से जुड़े 60 से 70 प्रतिशत तक मैनुअल काम एआई के जरिए आटोमेट किए जा सकते हैं। इससे बैंकों का समय और खर्च दोनों बचेंगे। हालांकि, इसे सीधे तौर पर 70 प्रतिशत कर्मचारियों की नौकरी जाने से जोड़कर देखना सही नहीं होगा।

एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार, बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम प्रबंधन से जुड़े कई ऐसे काम हैं, जिन्हें फिलहाल कर्मचारी मैन्युअल तरीके से करते हैं। इनमें ग्राहकों की वित्तीय स्थिति की जांच, कर्ज से जुड़े दस्तावेजों का विश्लेषण, नियमों के पालन की निगरानी और बैंकिंग लेन-देन पर नजर रखना शामिल है।

एआई की मदद से इन प्रक्रियाओं को तेजी से पूरा किया जा सकता है। इससे बैंक कम समय में ज्यादा जानकारी का विश्लेषण कर सकेंगे और संभावित जोखिमों की पहचान भी आसानी से कर पाएंगे।

बैंकों में जोखिम प्रबंधन का काम काफी महत्वपूर्ण होता है। इसके तहत यह आकलन किया जाता है कि किसी ग्राहक या कंपनी को कर्ज देने में बैंक को कितना जोखिम हो सकता है।

इसके लिए कर्मचारियों को कई दस्तावेजों और वित्तीय आंकड़ों की जांच करनी पड़ती है। एआई इन जानकारियों को तेजी से जुटाकर उनका विश्लेषण कर सकता है। इसके अलावा संदिग्ध लेन-देन और संभावित धोखाधड़ी की पहचान करने में भी यह तकनीक मददगार साबित हो सकती है। इस बदलाव का मुख्य उद्देश्य बैंकिंग प्रक्रियाओं को तेज और कम खर्चीला बनाना है। एआई के इस्तेमाल से कर्मचारियों का समय नियमित और दोहराए जाने वाले कामों में कम खर्च होगा। इसके बाद वे ज्यादा महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों पर ध्यान दे सकेंगे।



रिपोर्ट के मुताबिक, एआई से बचने वाले समय और संसाधनों का लगभग आधा हिस्सा बेहतर विश्लेषण, जोखिम से जुड़ी सलाह और तेजी से निर्णय लेने में लगाया जा सकता है।

वहीं बाकी संसाधनों का इस्तेमाल नई तकनीक विकसित करने, डेटा सुरक्षा और बैंकिंग व्यवस्था को मजबूत बनाने में किया जा सकता है।

हालांकि, एआई के बढ़ते इस्तेमाल से बैंक कर्मचारियों की भूमिका जरूर बदल सकती है। दस्तावेजों की जांच और आंकड़ों को व्यवस्थित करने जैसे काम मशीनों के जिम्मे जा सकते हैं, लेकिन जटिल मामलों का आकलन करने, महत्वपूर्ण फैसले लेने और ग्राहकों को सलाह देने में इंसानी विशेषज्ञता की जरूरत बनी रहेगी। ऐसे में बैंकिंग क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों को नई तकनीक के अनुसार अपने कौशल को विकसित करना होगा।

एआई अपनाने वाले बैंकों को भविष्य में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ भी मिल सकता है। वे कम समय में बेहतर फैसले लेने के साथ परिचालन लागत घटा सकेंगे। हालांकि, इसके लिए मजबूत तकनीकी ढांचे, प्रशिक्षित कर्मचारियों और डेटा सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था जरूरी होगी।